Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ वट पूर्णिमा पूजाविधि ॥

॥ वट पूर्णिमा शुभ हो ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ पूजन की तैयारी और सामग्री ॥

वट पूर्णिमा का पूजन ज्येष्ठ पूर्णिमा से संबंधित है। दिन और पूजन का समय स्थान तथा पंचांग के अनुसार देखें। यह सामान्य घरेलू विधि है; घर में प्रचलित क्रम को प्राथमिकता दें।

सामग्री पहले रखें

जल का लोटा, रोली या कुमकुम, अक्षत, फूल, कच्चा सूत या मौली, दीपक, बाती, धूप, फल, मिठाई और प्रसाद लें। सावित्री-सत्यवान का चित्र या प्रतीक तथा श्रृंगार सामग्री अपनी पारिवारिक रीति के अनुसार रखें।

वट वृक्ष का चयन

पूजन के लिए सुरक्षित स्थान वाला जीवित बरगद चुनें। वृक्ष के नीचे सूखी पत्तियाँ हों तो दीपक को उनसे दूर रखें। पेड़ पर कील न लगाएँ और परिक्रमा करते समय सार्वजनिक रास्ता न रोकें।

वृक्ष उपलब्ध न हो तो

पास में वट वृक्ष न मिले या वहाँ पहुँचना संभव न हो तो घर में चित्र अथवा प्रतीक रखकर देवी सावित्री का स्मरण, कथा और प्रार्थना कर सकते हैं। अपने परिवार की परंपरा से इस विकल्प की पुष्टि करें।

॥ वट वृक्ष के पास पूजा क्रम ॥

१. स्नान और संकल्प

स्वच्छ वस्त्र पहनकर देवी सावित्री का स्मरण करें। परिवार के स्वास्थ्य और मंगल की प्रार्थना के साथ अपनी क्षमता के अनुसार व्रत का संकल्प लें। उपवास का प्रकार स्वास्थ्य के अनुरूप रखें।

२. जल, पुष्प और दीप

बरगद की जड़ों के पास स्वच्छ जल अर्पित करें। रोली, अक्षत और फूल चढ़ाएँ। सावित्री-सत्यवान के चित्र के सामने भी पुष्प रखें। धूप-दीप को वृक्ष से उचित दूरी पर सुरक्षित रखें।

३. सूत और परिक्रमा

कच्चा सूत हाथ में लेकर वृक्ष की परिक्रमा करें। अपनी रीति के अनुसार धागा ढीला रखें। परिक्रमा की संख्या अलग-अलग घरों में अलग है; सात या कोई दूसरी संख्या सबके लिए समान नियम नहीं है।

४. कथा और प्रार्थना

सावित्री-सत्यवान की कथा पढ़ें या सुनें। परिवार की शांति, स्वास्थ्य और आपसी सम्मान के लिए प्रार्थना करें। आरती की रीति हो तो करें, फिर फल या प्रसाद बाँटें।

॥ देवी सावित्री को प्रणाम ॥

॥ पूजा का समापन ॥

पारण कैसे करें

व्रत खोलने का समय घर की रीति और संकल्प पर निर्भर करता है। कुछ परिवार पूजा के बाद जल-प्रसाद ग्रहण करते हैं; कुछ में व्रत की अवधि अलग होती है। अपने क्षेत्र की पूर्णिमा और परिवार के नियम जानकर ही पारण करें।

भेंट और सेवा

सामर्थ्य से प्रसाद, फल या भोजन बाँटें। घर के बड़ों से आशीर्वाद लेने और प्रियजनों की कुशलता पूछने की परंपरा भी निभाई जा सकती है। पेड़ के पास बची सामग्री और धागों का कचरा न छोड़ें।

स्वास्थ्य का ध्यान

लंबे उपवास से कमजोरी हो तो जल और भोजन लें। गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी या नियमित दवा की स्थिति में चिकित्सकीय सलाह को महत्व दें। आवश्यक दवाएँ स्वयं बंद न करें।

वट पूर्णिमा और ज्येष्ठ अमावस्या का वट सावित्री व्रत एक ही तिथि पर नहीं आते। स्थानीय पंचांग से अपनी तिथि जाँचें।

॥ वट पूर्णिमा शुभ हो ॥